आख्यान-08

बी.ए. I NRB

विनीता कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
डा० एल.के.वी.डी. कालेज,
ताजपुर।

रश्मिरथी

कथावस्तु

तृतीय सर्ग

कौरवों ने द्यूत के छल से पाण्डवों को तेरह वर्षों तक वनवास झेलने को विवश किया था। इन तेरह वर्षों में से बारह वर्षों तक पाण्डव वनों में खुलकर रह सकते थे, किन्तु तेरहवें वर्ष उन्हें अज्ञातवास करना था, जिसमें उन्हें कोई पहचान न सके। जब अज्ञातवास भी पूरा हो गया, तब पाण्डव इन्द्रप्रस्थ वापस आये और कौरवों तथा पाण्डवों के बीच सन्धि कराने को भगवान कृष्ण हस्तिनापुर गये, जो कौरवों की राजधानी थी। लेकिन सन्धि की कौन कहे, दुर्योधन ने उल्टे भगवान कृष्ण को गिरफ्तार करना चाहा। उस पर भगवान को क्रोध आ गया और भरी सभा में उन्होंने अपना विराट रूप प्रकट किया। कहते हैं उनका क्रुद्ध विराट रूप देखते ही लोग मूर्च्छित हो गये। केवल विदुरजी की चेतना ठीक रही। उन्होंने धृतराष्ट्र से कहा, 'महाराज आश्चर्य की बात है कि भगवान अपने विराट रूप में विराज रहे हैं। इस पर धृतराष्ट्र ने अपने अन्धे होने पर पश्चाताप किया। कहते हैं कि पश्चात्ताप करते ही विराट रूप देखने तक के लिए उनको दृष्टि मिल गयी।

विराट रूप समेटकर जब भगवान कृष्ण कौरवों की सभा छोड़कर चले, तब उन्हें आदरपूर्वक नगर से कुछ दूर पहुँचाने के लिए उनके साथ कर्ण गया था। भगवान को गिरफ्तार करने की दुरभिसन्धि में कर्ण का भी हाथ था। अतएव वह लज्जित होकर ही भगवान के सामने आया था। किन्तु, राजनीति-विशारद कृष्ण

ने बाँह पकड़ कर उसे अपने रथ में बिठा लिया और रास्ते में वे उसे समझाने लगे कि 'तू वास्तव में कुन्ती का पुत्र है। अतएव, तुझे चाहिए कि कौरवों को छोड़कर पाण्डवों के पक्ष में आ जाये। तू तो कुन्ती का पहला ही पुत्र है, अतएव पाण्डवों की ओर से राज्याभिषेक हम तेरा ही करेंगे। सभी पाण्डव तेरे पीछे-पीछे चलेंगे और मैं भी तेरे पीछे ही चलूँगा।'

किन्तु कर्ण इससे विचलित नहीं हुआ। उसने कहा कि 'जो रहस्य आप बतला रहे हैं, उसकी सूचना मुझे सूर्यदेव से पहले ही मिल चुकी है। किन्तु, कुन्ती ने मेरे साथ माता का बर्ताव नहीं किया। जो बात आप आज कह रहे हैं, उसे कुन्ती को उस दिन बतला देना चाहिए था, जिस दिन सबके सामने कृपाचार्य ने मेरी जाति पूछी थी। अब भला कौन विश्वास करेगा कि मैं कुन्ती का ही पुत्र हूँ? इससे तो मुझे और अर्जुन, दोनों को कलंक लगाने वाला है। इसके सिवा, जरा यह भी तो सोचिये कि दुर्योधन ने मेरे प्रति कैसा निश्छल व्यवहार किया है! अब आज जब उस पर आपदाएं आयी हैं, मैं उसे कैसे छोड़ सकता हूँ? वह मेरा परम मित्र है और विपत्ति विपत्ति में मित्र का साथ न देना सबसे बड़ा पाप है। मैं राजा बनना नहीं चाहता, न यही चाहता हूँ कि संसार मुझे युधिष्ठिर के अग्रज रूप में जानकर मेरा सम्मान करे मैं तो युद्ध के निमित्त तत्पर हूँ, यह इसलिए कि दुर्योधन का मेरे रोम-रोम पर ऋण है और मैं प्राण देकर भी उस ऋण को चुकाना चाहता हूँ। अतएव, अब युद्ध को रोक रखने का प्रयास व्यर्थ है। अब तो कोई शुभ दिन देखकर लड़ाई शुरु करा दीजिए।'

किरण कुमारी
20-04-2020